लघु वाक्य वृत्ति

1. **स्थूलो मांसमयो देहो सूक्ष्मः स्याद्वासनामयः।**
ज्ञानकर्मेन्द्रियैः सार्ध धीप्राणौ तच्छरीरगौ।।
यह स्थूलशरीर मांस का बना हुआ है, तथा सूक्ष्मशरीर जो कि ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, प्राण एवं बुद्धि से युक्त है–वह वासनामय है।

2. **अज्ञानं कारणं साक्षी बोधस्तेषां विभासकः।**
बोधाभासो बुद्धिगतः कर्तास्यात्पुण्यपापयोः।।
अज्ञान हमारे इन दो शरीरों का कारण है, साक्षी इनका प्रकाशक है। बुद्धि में प्रतिबिम्बित चेतनता ही पाप–पुण्य फलों का कर्ता जीव है।

3. **स एव संसरेत्कर्म–वशाल्लोकद्वये सदा।**
बोधाभासाच्छुद्धबोधं विविच्यादतियत्नतः।।
वह ही जीव अपने कर्मवशात् इह और परलोक में संसरण को प्राप्त होता है। अतः विवेक–बुद्धि से इस चिदाभास तथा चेतनता को प्रयत्नपूर्वक पृथक् देखना चाहिए।

4. **जागरस्वप्नयोरेवं बोधाभासविडम्बना।**
सुप्तौ तु तल्लये शुद्ध–बोधो जाड्यं प्रकाशयेत्।।
जाग्रत और स्वप्न अवस्था में ही बोधाभास का खेल होता है। सुषुप्ति में बोधाभास के लय हो जाने पर शुद्ध चेतनता अज्ञान को प्रकाशित करती है।

5. **जागरेऽपि धियस्तूष्णीं भावः शुद्धेन भासयेत्।**
धीव्यापाराश्च तद्भास्याः चिदाभासेन संयुताः।।
जाग्रत में भी शान्त बुद्धि को यह चेतनता प्रकाशित करती है, चिदाभास के सारे व्यापार शुद्ध चेतनता के द्वारा ही प्रकाशित होते है।

6. **वह्निनतप्तजलं ताप युक्तं देहस्य तापकम्।**
चिद्भास्या धीस्तदाभास युक्तान्यं भासयेत् तथा।।
जैसे अग्नि के संयोग से गरम हुआ जल शरीर को जलाने में सक्षम होता है, वैसे ही चेतनतत्व से प्रकाशित हुई बुद्धि भी सब वृत्तियों को प्रकाशित करने में सक्षम हो जाती है।

7. **रूपादौ गुणदोषादि विकल्पा बुद्धिगाः क्रियाः।**
ताः क्रिया विषयैः सार्ध भासयन्ती चितिर्मता।।
रूपादि में गुण–दोषादि के विकल्पों की कल्पना बुद्धि के द्वारा ही होती है। रूपादि विषयो के साथ बुद्धि के इन समस्त व्यवहार को शुद्ध चेतनता ही प्रकाशित करती रहती है।

8. **रूपाच्च गुणदोषाभ्यां विविक्ता केवला चितिः।**
सैवानुवर्तते रूप–रसादीनां विकल्पने।।
रूपादि विषय एवं जीव द्वारा उन पर कल्पित गुण दोष रूपी अध्यारोप को अधिष्ठान रूपी चेतनता से विवेक द्वारा पृथक् कर देखों। यह चेतनता सब रूपादि को आत्मवान करने के कारण सभी विकल्पों का अनुवर्तन करती सी दीखती है।

9. **क्षणे क्षणेऽन्यथाभूता धीविकल्पाश्चितिर्न तु।**
मुक्तासु सूत्रवद्बुद्धि विकल्पेषु चितिः स्थिता।।
बुद्धि की वृत्तियां प्रतिक्षण बदलती रहती है, किन्तु उनकी साक्षी चेतनता नहीं। जैसे मोतियों की माला के प्रत्येक मोतियों में सूत्र अनुस्यूत है, वैसे ही यह चेतनता समस्त बुद्धिवृत्तिको व्यात करती है।

१०. मुक्ताभिरावृतं सूत्रं मुक्तयोर्मध्य ईक्षते।
तथावृता विकल्पै–श्चित् स्पष्टा मध्ये विकल्पयोः।।
जैसे मोतियों से आवृत्त सूत्र दो मोतियों के बीच में निरावृत्त दीखता है, वैसे ही बुद्धि की समस्त वृत्तियों से व्याप्त चेतनता दो वृत्ति के मध्य में निर्विघ्न दीखाई देती है।

११. नष्टे पूर्वविकल्पे तु यावदन्यस्य नोदयः।
निर्विकल्पक चैतन्यं स्पष्टं तावद्विभासते।।
जब पूर्व वृत्ति नष्ट हो चूकी हो, तथा दूसरी वृत्ति अभी उत्पन्न नहीं हुई हो, उस समय इन दोनों वृत्तियों के मध्य में निर्विकल्प चैतन्य स्पष्टरूप से भासित होता है।

१२. एकद्वित्रि–क्षणेनैवं विकल्पस्य निरोधनम्।
क्रमेणाभ्यस्यतां यत्नाद् ब्रह्मानुभवकांक्षिभिः।।
ब्रह्मानुभव के इच्छुक लोगों को बहुत सावधानीपूर्वक पहले एक, दो, तीन क्षणों तक अर्थात् क्रमशः अवधि को बढाते हुए बुद्धि वृत्तियों के निरोध का अभ्यास करना चाहिए।

१३. सविकल्पकजीवोऽयं ब्रह्म स्यान्निर्विकल्पकम्।
अहं ब्रह्मेति वाक्येन सोऽयमर्थोऽभिधीयते।।
जो जीव इस समय सोपाधिक रूप की तरह दिख रहा है, वह ही वस्तुतः निरूपाधिक ब्रह्म है, यह ही रहस्य 'अहं ब्रह्मास्मि' महावाक्य के द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

१४. सविकल्पकचिद्योऽहं ब्रह्मैकं निर्विकल्पकम्।।
स्वतः सिद्धा विकल्पास्ते निरोद्धव्या प्रयत्नतः।।
जो यह सविकल्पक चेतनता है, वह अहं पद का वाच्यार्थ जीव है, और जो यह निर्विकल्पक चेतनता है, वो अहं पद का लक्ष्यार्थ ब्रह्म है। उस निर्विकल्प ब्रह्म के साक्षात्कार हेतु इन स्वतःसिद्ध विकल्पों के प्रवाह को बलपूर्वक रोकना चाहिए।

१५. शक्यः सर्वनिरोधश्चेत् समाधिर्ज्ञानिनां प्रियः।
तदशक्तौ क्षणं रुद्ध्वा श्रद्धेया ब्रह्मतात्मनः।।
ज्ञानियों की प्रिय समाधि समस्त विकल्पों के निरोध से ही हो सकती है, यदि सब विकल्पों का सदा के लिए निरोध नहीं कर सकते तो क्षण भर के लिए भी श्रद्धालु को रोक कर अपनी ब्रह्मस्वरूपता का निश्चय अवश्य कर लेना चाहिए।

१६. श्रद्धालुर्ब्रह्मतां स्वस्य चिन्तयेद् बुद्धिवृत्तिभिः।
वाक्यवृत्त्या यथाशक्तिः ज्ञात्वा ह्यभ्यस्यतां सदा।।
श्रद्धालु व्यक्ति अपनी ब्रह्मस्वरूपता के बारे में अपनी बुद्धि द्वारा चिन्तन करे, तथा इस वाक्यवृत्ति ग्रन्थ के द्वारा ज्ञान प्राप्त करके यथाशक्ति सदा अभ्यास करें।

१७. तच्चिन्तनं तत्कथनं तत्परस्परबोधनम्।
एतदेकपरत्वं च ब्रह्माभ्यासं विदुर्बुधा।।
ब्रह्माभ्यास का अभिप्राय यह है कि ब्रह्म का ही चिन्तन हो, उसी की चर्चा हो, अन्योन्य चर्चा एवं चिन्तन से ज्ञान में निष्ठा में रमण हो।

१८. देहात्मधीवद् ब्रह्मात्म–धी दार्ढ्ये कृतकृत्यता।।
यदा तदायं ह्रियतां मुक्तोऽसौ नात्र संशयः।।
जब अज्ञानकाल की देहात्मबुद्धि की ही तरह ब्रह्मात्मबुद्धि सहज हो जाए, तब यह मनुष्य जीवन्मुक्त हो कृतकृत्य हो जाता है। जब भी उसके प्रारब्ध समाप्त होते है, वह विदेहमुक्त हो ब्रह्म में लीन हो जाता है।